अक्टूबर 2023 वर्ष 2, अंक 9

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.— मासिक समाचार

"हममें से किसी के लिए भी जीवन आसान नहीं है। लेकिन उससे क्या? हमारे अंदर दृढ़ता और सबसे बढ़कर खुद पर भरोसा होना चाहिए। हमें यह विश्वास करना चाहिए कि हम किसी चीज के लिए प्रतिभाशाली हैं, और यह चीज, किसी भी कीमत पर, प्राप्त की जानी चाहिए।"

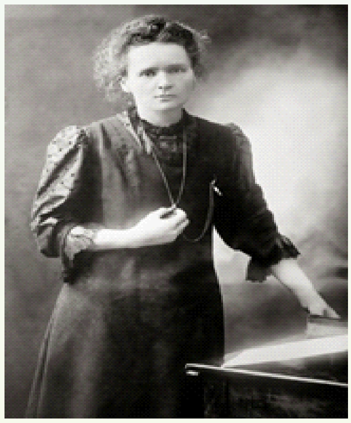

— मैरी क्यूरी
नोबेल पुरस्कार विजेता

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 5

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 9

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा— 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. 2023 स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय अध्ययन में तीन डी.ई.आई. प्रोफेसरों को वैज्ञानिकों की विश्वश्रेणी में शीर्ष 2% में स्थान प्राप्त हुआ.......... 3
2. संकाय समाचार.......... 3
   कला संकाय.......... 3
   स्टाफ समाचार.......... 4
3. शिक्षा संकाय 4
   विज्ञान शिक्षण के लिए संसाधनों का विकास' विषय पर कार्यशाला का आयोजन.......... 4
4. अभियांत्रिकी संकाय.......... 4
   स्टाफ समाचार.......... 4
5. विज्ञान संकाय 4
   स्टाफ समाचार.......... 4
   छात्रोप्लब्धि.......... 4

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

6. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से.......... 5
7. लैंगिक अंतर (Gender Gap) और महिला सशक्तिकरण.......... 5
8. सूचना केन्द्रों से समाचार 6
   गादीरास (सुकमा) और जालंधर में डी.ई.आई. प्रशिक्षण केंद्रों ने 'आजादी का अमृत महोत्सव: मेरी माटी मेरा देश' अभियान मनाया.......... 6
   डी.ई.आई. सूचना केंद्र करोलबाग ने 'स्वच्छता अभियान' का आयोजन किया.......... 7
   मुरार केन्द्र पर शिक्षक दिवस समारोह.......... 8
   फरीदाबाद केंद्र में बैच 2022–23 के पूर्व छात्रों की बातचीत.......... 8

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

9. संपादक की डेस्क से.......... 9
10. नैतिकता और सहानुभूति – नई नेतृत्व अनिवार्यता.......... 9
11. AAFDEI गतिविधियाँ: एक रिपोर्ट.......... 10
12. पूर्व छात्र बाइट्स.......... 10
    प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 10

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. समाचार

2023 स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय अध्ययन में तीन डी.ई.आई. प्रोफेसरों को वैज्ञानिकों की विश्वश्रेणी में शीर्ष 2% में स्थान प्राप्त हुआ

प्रो. वी. बी. गुप्ता

प्रो. सुखदेव रॉय

प्रो. डी. के. चतुर्वेदी

विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों पर स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय का हालिया अध्ययन, जॉन पी.ए. आयोनिडिस और अन्य द्वारा प्रकाशित। 4 अक्टूबर को पी एल ओ एस बायोलॉजी (इम्पैक्ट फैक्टर 9.8) जर्नल में एल्सेवियर डेटा रिपोज़िटरी, वी6, *"अक्टूबर 2023 डाटा अपडेट फॉर अपडेटेड साइंस वाइड ऑथर डेटाबेसेस ऑफ स्टैंडराइस्ड साइटेशन इंडीकेटर्स"* शीर्षक वाले 2023 के प्रकाशन में, तीन डी.ई.आई. प्रोफेसरों को प्रतिष्ठित सूची में रखा गया–पॉलिमर के क्षेत्र में प्रोफेसर वी. बी. गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम और पूर्व प्रमुख, टेक्सटाइल इंजीनियरिंग विभाग, आई आई टी दिल्ली, प्रोफेसर सुखदेव रॉय, प्रमुख, विभाग ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स और फोटोनिक्स के क्षेत्र में भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग, डी.ई.आई. और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इमेज प्रोसेसिंग के क्षेत्र में फुटवियर टेक्नोलॉजी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर डी. के. चतुर्वेदी इस सूची में शामिल हैं।

यह व्यापक विश्लेषण स्कोपस डेटाबेस से उद्धरणों का उपयोग करके आयोजित किया गया था, जिसमें कम से कम पांच प्रकाशित शोध पत्रों के साथ, वर्ष 2023 तक सभी वैज्ञानिकों के लंबे करियर के उद्धरण प्रभाव का आकलन किया गया था। सभी वैज्ञानिक क्षेत्रों में लेखकों की रैंकिंग कुल उद्धरणों, एच–इंडेक्स, सह–लेखक–समायोजित श्राइबर एचएम–इंडेक्स, विभिन्न लेखक पदों पर कागजात के उद्धरण और एक समग्र संकेतक (सी–स्कोर) पर विचार करते हुए एक समग्र संकेतक की रैंकिंग पर आधारित थी। सभी वैज्ञानिकों को 22 क्षेत्रों और 174 उप–क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया था। चयन सी–स्कोर (स्व–उद्धरण के साथ और बिना) या उप–क्षेत्र में 2% या उससे ऊपर की प्रतिशत रैंक के आधार पर शीर्ष 1,00,000 वैज्ञानिकों पर आधारित था।

संकाय समाचार

कला संकाय

डी.ई.आई. के कला संकाय के हिंदी विभाग में 14 सितंबर, 2023 को 'हिंदी दिवस' अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा के विकास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पूरे उत्साह से भाग लिया और बोलचाल एवं तकनीकी भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता के बारे में बताया। इस अवसर का जश्न मनाने के लिए छात्रों ने हिंदी में कविताएँ, संस्मरण और निबंध भी प्रस्तुत किए। छात्रों का उत्साहवर्धन करने के लिए हिंदी विभाग के सभी संकाय सदस्य उपस्थित थे। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना ने वर्तमान युग में प्रयोजनमूलक हिंदी के महत्त्व के बारे में बताया। डॉ. सूरज प्रकाश, सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, जो वर्तमान में जापान के टोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में अतिथि शिक्षक हैं, ने जापान में हिंदी को दिए जाने वाले महत्त्व पर बात की। कार्यक्रम का

आयोजन सफल रहा।

स्टाफ समाचारः

1 से 2 अक्टूबर, 2023 तक श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी, यू.पी. द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा एवं श्रमण संस्कृति एक अनुशीलन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. निशीथ गौड़ ने ''*मुनिश्री प्रणम्यसागर विरचित अनासक्त महायोगी महाकाव्य में रसाभिव्यक्ति*'' विषय पर व्याख्यान दिया। वह 10 अक्टूबर, 2023 को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा भारतीय भाषा उत्सव संस्कृत प्रतिभा अन्वेषण कार्यक्रम के तहत आयोजित जिला और मंडल (उप–जिला) स्तर की संस्कृत गीत प्रतियोगिताओं में निर्णायक भी थीं।

शिक्षा संकाय

विज्ञान शिक्षण के लिए संसाधनों का विकास' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

22 सितंबर, 2023 को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के तहत शिक्षा संकाय के स्कूल ऑफ एजुकेशन में ''डेवलपमेंट ऑफ रिसोर्सेज़ फॉर साइंस टीचिंग'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। शिक्षा संकाय की डीन प्रोफेसर नंदिता सत्संगी ने विषय विशेषज्ञों और प्रतिभागियों का स्वागत किया।

रिसोर्स पर्सन, सुश्री अरुणा कटरागड्डा गली, मैनेजिंग पार्टनर, डिजिटल स्कूल और संस्थापक, स्कूल रेडियो, विशाखापट्टनम, ने प्रतिभागियों को अनुप्रयोगों के साथ उन्मुख किया और एनिमेशन, गेम, वीडियो, कहानियों, मॉडल (अपशिष्ट सामग्री से बने) के उपयोग और विज्ञान शिक्षण में पहेलियों का प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों ने संसाधन विकसित करने के लिए समूहों में काम किया और बाद में विज्ञान शिक्षण में इन सहायताओं के उपयोग का प्रदर्शन किया। कार्यशाला में 51 शिक्षक प्रशिक्षुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्कूल ऑफ एजुकेशन की समन्वयक डॉ. सोना दीक्षित ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. ज्योतिका खरबंदा और सुश्री रिंकी सतसंगी कार्यशाला की संयोजक थीं।

अभियांत्रिकी संकाय

स्टाफ समाचारः

प्रो. डी.के. चतुर्वेदी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग को 11–12 अक्टूबर, 2023 को आई आई टी गुवाहाटी में आयोजित 'सिस्टम इंजीनियरिंग इन बायोइकोनॉमी' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था, उन्होंने कृषि पारिस्थितिकी और एआई–आधारित ड्रोन प्रौद्योगिकी पर एक व्याख्यान दिया था। उन्होंने 18 अक्टूबर, 2023 को जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 'वैल्यू क्राइसेस इन प्रेजेंट टाइम' पर एक आमंत्रित व्याख्यान भी दिया।

विज्ञान संकाय

स्टाफ समाचारः

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रमुख, प्रोफेसर सुखदेव रॉय को वर्ष 2023–24 के लिए नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज इंडिया (एन. ए. एस. आई.) की इंजीनियरिंग साइंसेज के लिए फेलोशिप चयन समिति का सदस्य नियुक्त किया गया था। वे 1–2 अगस्त, 2023 को लेज़र, ऑप्टिक्स और फोटॉनिक्स पर तीसरे वैश्विक वेबिनार के सम्मेलन अध्यक्ष थे और उन्होंने ''कंट्रोलिंग द ब्रेन एंड हार्ट विथ लाइट '' विषय पर एक महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिया।

छात्रोप्लब्धि

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के शोधार्थी, हिमांशु बंसल को ''नॉवेल ऑप्टोजेनेटिक मेथड फॉर लो पॉवर हाई फेडिलिटी सस्टेन्ड न्यूरल स्पाईकिंग'' शीर्षक वाले शोध पत्र के लिए सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पेपर प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, स्प्रिंगर नेचर द्वारा €100 के नकद पुरस्कार के साथ यह सम्मान प्रतिष्ठित 16वें द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 5–8 जुलाई, 2023 के दौरान भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु में फोटॉनिक्स (फोटॉनिक्स–2023) में दिया गया।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

6 जून, 2023 के दी इंडियन एक्सप्रेस में ठीक समय पर प्रकाशित हुए अशोक ठाकुर, (पूर्व सचिव, उच्च शिक्षा, भारत सरकार) और एस. एस. मंथा (पूर्व अध्यक्ष, ए.आई.सी.टी.ई.) द्वारा 'नॉट सो ओपन लर्निंग' शीर्षक वाले लेख में उन्होने तर्क पेश किया है कि दूरस्थ शिक्षा पर यू.जी.सी. का शिकंजा है, जो अपारदर्शी है और 2020 की शिक्षा नीति (NEP 2020) के विरूध्द और राष्ट्रीय भावना के विपरीत है। यह प्रतिबंध (restriction) मुख्य रूप से क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार पर प्रतिबंधों के माध्यम से है, उदाहरण के लिए, डीम्ड–टू–बी–विश्वविद्यालयों को केवल मुख्यालय से ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओ डी एल) मोड में कार्यक्रम पेश करने की अनुमति है। लेखकों का तर्क है कि ''उच्च शैक्षणिक संस्थानों (एच ई आई) को ओ डी एल के लिए भी यू.जी.सी. की क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार की नीति का पालन करना आवश्यक है, जो पहली नज़र में एक विरोधाभास जैसा लगता है। यह खुली शिक्षा के विचार के विपरीत है, क्योंकि जिस तकनीक पर यह चलती है वह कोई भौगोलिक या राजनीतिक सीमा नहीं जानती। कृत्रिम रूप से प्रतिबंध लगाना खुले आसमान में बहने वाली हवाओं को रोकने की कोशिश करने जैसा है। दिल्ली में किसी को महाराष्ट्र में पंजीकरण कराने से कोई कैसे रोक सकता है? इसलिए, माधव मेनन समिति द्वारा 2011 में की गई इस सिफारिश पर फिर से विचार करने का समय आ गया है।''

यू.जी.सी. अध्यक्ष ने 17 अक्टूबर, 2023 को ओ डी एल कार्यक्रमों/ऑनलाइन कार्यक्रमों की पेशकश के लिए मान्यता प्राप्त/अधिकृत एच ई आई के कुलपतियों के साथ परामर्शी बैठकें की। और इन बैठकों के दौरान हमने ओ डी एल कार्यक्रमों में क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार पर लगे प्रतिबंध का मुद्दा उठाया। हमने दोहराया कि उनके हटाने से नामांकन में पर्याप्त वृद्धि होगी और इस प्रकार देश को 2035 तक 0.50 के सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio) के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी, जैसा कि एन ई पी 2020 में निहित है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

<u>लैंगिक अंतर (Gender Gap) और महिला सशक्तिकरण</u>

वर्ष 2023 के लिए आर्थिक विज्ञान (Economic Sciences) में नोबेल पुरस्कार हार्वर्ड प्रोफेसर क्लॉडिया गोल्डिन को कार्यबल (work force) में महिलाओं की प्रगति के बारे में दुनिया की समझ को आगे बढ़ाने के लिए प्रदान किया गया, जैसा कि 10 अक्टूबर, 2023 के दी टाइम्स ऑफ इंडिया में रिपोर्ट किया गया था। उनके काम से पता चला कि अमेरिका में महिला श्रम बल की भागीदारी में 19वीं सदी में कृषि से औद्योगिक समाज में परिवर्तन के दौरान गिरावट देखी गई और 20वीं सदी में सेवा क्षेत्र की वृद्धि के साथ इसमें वृद्धि देखी गई।

अखबार की रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि ''आज अमेरिका में महिलाएं एक पुरुष द्वारा कमाए गए प्रत्येक डॉलर के मुकाबले 80 सेंट से कुछ अधिक कमाती हैं। अतीत में, लैंगिक अंतर को शिक्षा और व्यवसाय द्वारा समझाया जा सकता था। लेकिन गोल्डिन ने दिखाया है कि कमाई का अधिकांश अंतर अब समान नौकरियों में पुरुषों और महिलाओं के बीच है। और वह इसका कारण भेदभाव (discrimination) बताती हैं।''

11 अक्टूबर, 2023 के दी टाइम्स ऑफ इंडिया ने अपने संपादकीय पृष्ठ में 2019 आर्थिक विज्ञान के नोबेल पुरस्कार विजेता एस्थर डुफ्लो और अभिजीत बैनर्जी – दोनों एम आई टी प्रोफेसरों ने 'हर (Her) गोल्डिन वर्ड्स' शीर्षक का एक लेख प्रकाशित किया। उनका कहना है कि गोल्डिन का काम सीधे तौर पर यह समझने के लिए प्रासंगिक है कि भारत में इतनी कम महिलाएं वेतनभोगी काम में क्यों हैं और इसे कैसे बदला जा सकता है।

इस लेख में लेखक बताते हैं कि ''.....सौ साल पहले अमेरिका में ज्यादातर महिलाएं काम नहीं करती थीं। हालाँकि यह अभी भी सच है कि महिला श्रमिक पुरुषों की तुलना में कम हैं, पर अंतर बहुत बड़ा नहीं है – आज 47% श्रम शक्ति महिलाएँ हैं। 1920 में

यह संख्या 20% के करीब थी। मूलतः केवल अविवाहित महिलाएं ही काम करती थीं – श्रम बल में विवाहित महिलाओं का हिस्सा 6% था।

लेखकों के अनुसार, चूँकि भारत में बहुत सारी महिलाएँ पारिवारिक खेतों और पारिवारिक व्यवसायों में काम करती हैं जहाँ उनके योगदान पर ध्यान नहीं दिया जाता या दर्ज नहीं किया जाता, अधिकांश अनुमान महिला श्रम शक्ति के अंश पर 25% की ऊपरी सीमा होगी, जो 1920 के अमेरिका के करीब है।

लेखक कहते हैं कि विवाहित भारतीय महिलाओं पर घर पर (घर चलाने और बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करने के बीच) दायित्व इतने अधिक होते हैं कि घर के बाहर नियमित नौकरी का प्रबंधन करना मुश्किल होता है। एक अन्य कारक जो महिलाओं को काम करने से हतोत्साहित करता है वह यह है कि जब महिलाएं आर्थिक रूप से बहुत अधिक स्वतंत्र हो जाती हैं तो पुरुष असुरक्षित महसूस करते हैं, जैसा कि 19वीं सदी में अमेरिका में होता था।

लेखकों को यह भी लगता है कि महिलाओं को कार्यस्थल पर लाने के लिए सरकार द्वारा बहुत कम प्रयास किया जा रहा है। यह भारत को एक महान आर्थिक शक्ति बनने की आकांक्षा पर एक महत्वपूर्ण ब्रेक है।

इस पृष्ठभूमि में, लैंगिक अंतर (gender gap) को कम करने और महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने में डी.ई.आई. का योगदान अनुकरणीय रहा है। 100 साल पहले (1 जनवरी, 1917 को) दयालबाग़ में एक सह–शैक्षिक मिडिल स्कूल (कक्षा IV से VIII) ने काम करना शुरू किया था और डी.ई.आई. के पास 1981 में स्थापना के बाद डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी में 60% से 70% महिला छात्रों को नामांकित करने का अनूठा रिकॉर्ड है। डी.ई.आई. के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को शुरू करते समय, इसके वास्तुकार (Architect) परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सतसंगी साहब, शिक्षा सलाहकार समिति (Advisory Committee on Education–ACE एक गैर–वैधानिक निकाय जो डी.ई.आई. के लिए थिंक–टैंक के रूप में कार्यरत है) के अध्यक्ष ने यह देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा – ''दूरस्थ शिक्षा पर नई पहल ACE की ओर से आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए दूरदराज और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा के दूरस्थ माध्यम के द्वारा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लाभों को बढ़ाने के हमारे प्रयासों का एक परिणाम था। अब तक सस्ती, कम कीमत पर या यहां तक कि मुफ्त में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच नहीं थी।'' ये भविष्यसूचक शब्द थे क्योंकि 20 वर्षों से भी कम समय में दूरस्थ कार्यक्रम ने 25,000 से अधिक छात्रों को विभिन्न व्यावसायिक ट्रेडों में प्रशिक्षित किया, और कई अन्य छात्रों को उच्च स्तरीय कार्यक्रमों में प्रशिक्षित किया, जो देश को आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं। इनमें से लगभग 40% महिलाएं थीं। उनमें से कई उद्यमी बन गई हैं। इसकी एक उल्लेखनीय शाखा राजाबरारी की एक रोचक कहानी है – भारत के मध्य प्रदेश राज्य में सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का एक छोटा सा आदिवासी गाँव, जहाँ ड्रेस डिज़ाइनिंग और टेलरिंग पर एक कार्यक्रम कुछ वर्षों तक चला और कई गृहिणियों ने इसमें भाग लिया। आज बड़ी संख्या में महिलाएं कई स्वयं सहायता समूहों में संगठित हो गई हैं और स्वतंत्र रूप से कमाने लगी हैं। इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली डी.ई.आई. की प्रोफेसर संगीता सैनी ने 'सामाजिक उद्यमों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण' नामक पुस्तक लिखी है, जो इस आंदोलन की कठिन लेकिन रोमांचक यात्रा का वर्णन करती है।

21 जून, 2023 की 'दी हिंदू' की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2023 के लिए विश्व आर्थिक मंच के वैश्विक लिंग सूचकांक (Global Gender Index) में 146 देशों में से भारत का रैंक काफी कम –127– है। भारत ने 2022 के आंकड़ों से 1.4 प्रतिशत अंक बेहतर किए। इसने कुल लैंगिक अंतर को 64.3% कम कर दिया, लेकिन आर्थिक भागीदारी में केवल 36.3% समानता तक पहुँच पाया। एक उम्मीद की किरण, जो शिक्षाविदों को प्रसन्न करेगी, यह है कि देश ने शिक्षा के सभी स्तरों पर नामांकन में समानता हासिल कर ली है।

आइसलैंड दुनिया में सबसे अधिक लैंगिक–समानता वाला देश है, जिसने 90% लैंगिक अंतर को पाट दिया है, चीन 107 पर, श्रीलंका 115 पर और पाकिस्तान 142 पर है।

— प्रोफेसर वी.बी. गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.आई.-डी.ई.पी. द्वारा एकत्रित और संकलित

सूचना केन्द्रों से समाचार

गादीरास (सुकमा) और जालंधर में डी.ई.आई. प्रशिक्षण केंद्रों ने 'आजादी का अमृत महोत्सवः मेरी माटी मेरा देश' अभियान मनाया

गृह मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, भारत का, 'आजादी का अमृत महोत्सवः मेरी माटी मेरा देश', पंचायत स्तर पर एक देशभक्ति अभियान, 22 सितंबर, 2023 को सभी शिक्षकों, छात्रों, ग्रामीणों और सरपंचों द्वारा डी.ई.आई. प्रशिक्षण केंद्र, गादीरास (सुकमा) में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। इसके बाद छात्रों द्वारा मातृभूमि को समर्पित एक गीत प्रस्तुत किया गया। श्री अनामी शरण, द्वितीय कमान, द्वितीय बटालियन सी.आर.पी.एफ. और सी.आर.पी.एफ. के अन्य अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बनाने के लिए 4 ग्राम पंचायतों गादीरास, कोंड्रे, मनकापाल और बोडको के सरपंच और पंचायत सचिव भी उपस्थित थे। 'अमृत कलश यात्रा' का आयोजन किया गया और ग्रामीणों, सरपंचों और छात्रों द्वारा अमृत कलश को माटी से भरा गया। श्री अनामी शरण ने एक संक्षिप्त भाषण द्वारा आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। यह आयोजन बेहद सफल रहा।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से प्राप्त निर्देशों का पालन करते हुए, भारत सरकार की ओर से 12 अक्टूबर, 2023 को सूचना

केंद्र, जालंधर के परिसर में अमृत कलश यात्रा का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता सचिव श्री जसबीर सिंह ने की। इस अवसर पर शाखा सचिव श्री अभिषेक कालरा सम्मानित अतिथि थे। केंद्र प्रभारी श्री बलबीर सिंह ने अतिथियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों के सम्मान और संस्थान में उनके स्वागत के लिए एक पूर्व छात्र द्वारा बैज–पिनिंग समारोह के साथ हुई।

विकसित और उभरते भारत के लिए 'अमृत कलश यात्रा' और 'पांच प्रण संकल्प' का संक्षिप्त परिचय दिया गया। जीएमटी तथा इलेक्ट्रीशियन एवं वायरमैन पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों को 'मेरी माटी मेरा देश अभियान' के बारे में भी विस्तार से बताया गया। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त माटी को एकत्र किया गया और बाद में समूह द्वारा 'पंच प्राण' का संकल्प लेकर कलश में डाला गया।

परिसर में यात्रा का समापन सतसंग भवन की कृषि भूमि में किया गया। माटी पुनः खेत की पवित्र मिट्टी में मिल गयी। विकसित भारत के संकल्प के प्रति कृतज्ञता के भाव के साथ मिश्रित देशभक्ति की भावनाओं ने प्रतिभागियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का समापन एक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

डी.ई.आई. सूचना केंद्र करोलबाग ने ‘स्वच्छता अभियान’ का आयोजन किया

DEI के करोल बाग केंद्र में 8 अक्टूबर, 2023 को एक सार्वजनिक पार्क में ‘स्वच्छता अभियान’ का आयोजन किया गया, जिसमें वर्तमान छात्रों, पूर्व छात्रों और संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और दूसरों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

मुरार केन्द्र में शिक्षक दिवस समारोह

सूचना केन्द्र मुरार में शिक्षक दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह की शुरुआत संस्थान की प्रार्थना से हुई, जिसके बाद छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। छात्रों ने प्रेरणादायक कविताएँ और गीत सुनाए और शिक्षकों के योगदान और विशेषताओं पर आधारित भाषण भी दिए। केंद्र प्रभारी ने शिक्षक दिवस मनाने का महत्व समझाया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत के साथ हुआ।

फरीदाबाद केंद्र में बैच 2022–23 के पूर्व छात्रों की बातचीत

DEI सूचना केंद्र, फरीदाबाद ने 20 सितंबर 2023 को केंद्र में बैच 2022–23 की पूर्व छात्र बैठक का आयोजन किया। केंद्र प्रभारी डॉ. जयेंद्र वर्मा ने ऑफिस असिस्टेंट–कम–कंप्यूटर ऑपरेटर कार्यक्रम के बैच 2022–23 के छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने केंद्र के लिए पूर्व छात्रों के महत्व और उनके जीवन में संस्थान के महत्व के बारे में बात की। इंटरेक्शन सत्र के दौरान, पूर्व छात्रों ने उद्यमी कैसे बनें और स्टार्ट–अप (start-up) कैसे शुरू करें, इस पर चर्चा की। उन्होंने विभिन्न नौकरी के अवसरों और लिंकडिन जैसे ऑनलाइन सेवा प्रदाताओं के महत्व के बारे में जानकारी साझा की। इसके अलावा उन्होंने अपने निजी अनुभव भी साझा किये।

पूर्व छात्रों ने अपने रिकॉर्ड और संपर्क नंबर अपडेट किए। उन्हें यादगार स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। अंत में, केंद्र प्रभारी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया और बैठक सकारात्मक और ऊर्जावान तरीके से संपन्न हुई, उसके बाद चाय और नाश्ता हुआ।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

इस अंक में शामिल "नैतिकता और सहानुभूति – नई नेतृत्व अनिवार्यता" शीर्षक लेख, हमारे समाज को परेशान करने वाली एक चिंताजनक स्थिति को रेखांकित करता है – अर्थात् नैतिकता और आर्थिक विकास के बीच का अंतर। जैसे–जैसे हम तकनीकी प्रगति और भौतिक सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचते हैं, कोई भी आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता क्योंकि वह नही जानते कि इसके लिए हमने अत्यंत परिश्रम तथा कठिनाईयों का सामना किया है। माता–पिता और शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह हम युवाओं में सहानुभूति और दयालुता के मूल्यों की भावना को विकसित करें, सही मार्गदर्शन करें जो उचित है, उसके लिए साहसपूर्वक लड़ने में सहायता प्रदान करें और इस प्रकार उन्हें नैतिक रूप से स्पष्ट निर्णय लेने में मदद करें, साथ ही उनके अन्दर से डर की भावना को दूर करें। हमारे जीवन की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि हम व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के साथ मजबूत कार्य नैतिकता और उच्च नैतिक सिद्धांतों को कितना सफलतापूर्वक संतुलन बनाकर रख सकते हैं।

दयालबाग़ की जीवन शैली 'बेहतर दुनियादारी' (Better Worldliness) के आदर्श का पालन करती है जो डी.ई.आई. की शिक्षा प्रणाली के साथ अच्छी तरह से एकीकृत है। 18 जनवरी, 2020 को भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और आ.ईटी. सचिव, श्री अजय साहनी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, "आध्यात्मिकता, संस्कृति और स्वयंसेवा की भावना से बहुत प्रभावित हूँ जो पूरे दयालबाग़ में स्पष्ट और सराहनीय है। इस असाधारण संस्थान की शक्तियों को आई सी टी, इलेक्ट्रॉनिक्स और उभरती प्रौद्योगिकियों की विस्तृत श्रृंखला की विशाल शक्ति के साथ जोड़कर, मुझे विश्वास है कि वास्तविक जीवन की कई समस्याओं को हल करना अब तक कठिन था, जिन्हें अब घरेलू संसाधनों से हल किया जा सकता है। इस जीवंत समुदाय और इसे प्रेरित करने वालों को शुभकामनाएं।"
टिप्पणियों और योगदान के रूप में आपकी प्रतिक्रिया aadeisnewsletter@gmail.com पर – हृदयपूर्ण से सराहना की जाएगी!

नैतिकता और सहानुभूति – नई नेतृत्व अनिवार्यता

सुगंधा सिंघल, वर्तमान में, वी पी– हैड ट्रेजरी, एस आर एफ लिमिटेड, बैच 2000–2001 एम बी ए, डी.ई.आई.

हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो प्रौद्योगिकी द्वारा सक्षम परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। दुनिया के प्रत्येक कोने की सूचनाओं तक आसान पहुँच और ए आई (Artificial Intellegence) ने हमारी योगदान करने की क्षमता को बदल दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस नए युग में तकनीकी कौशल और रणनीतिक कौशल निस्संदेह अत्यंत आवश्यक हैं, लेकिन वे अब एक सफल नेता के लिए ही विभेदक नहीं रह गए हैं, बल्कि मानवजीवन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वास्तव में, नैतिकता और सहानुभूति प्रभावी नेतृत्व की आधारशिला बनकर उभरी है।

नैतिकता नैतिक सिद्धांत हैं जो लोगों के व्यवहार और उनके पेशेवर तरीके से आचरण को नियंत्रित करते हैं, जबकि सहानुभूति यह समझने या महसूस करने की प्रणाली है कि कोई अन्य व्यक्ति हृदय स्वरूप क्या अनुभव कर रहा है। नैतिकता और सहानुभूति एक साथ मिलकर, इस डिजिटल युग में एक अत्यंत आवश्यक नैतिक दिशा–निर्देश के रूप में कार्य करते हैं। नैतिकता सदैव मानव अस्तित्व की आधारशिला रही है। आज प्रौद्योगिकी क्षेत्र अत्यधिक जटिल सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, तकनीकी और पर्यावरणीय प्रणालियों का भयावहा चक्रव्यूह है जिसके परिणामस्वरूप, नैतिक रूप से व्यवहार करने और महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने के बीच अंतर्निहित तनाव और कठिनाईयाँ भी अधिक बढ़ गयी हैं। नेताओं को अक्सर ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जहां नैतिकता और ईमानदारी एक लाभप्रद तरीका साबित नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार, "नैतिक नेताओं" को विकसित करना अनिवार्य है जिनमें नैतिकता की भावना हो तथा जिनमें ऐसे निर्णय लेने का साहस हो जो नैतिक रूप से सही हों और जो व्यक्तियों के लिए लाभप्रद व सरहानीय हों। भविष्य के नेताओं को भी ऐसे कार्यबल के साथ कार्य करना होगा जो विविध हो और जिनके काम करने और सोचने का तरीका अलग हो और जो अलग–अलग व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित हो। नैतिकता के नए युग में नैतिक नेताओं को इस बात पर विचार करना चाहिए कि ये कारक उन व्यक्तियों को कैसे प्रभावित करते हैं जिनका दैनिक जीवन में नैतिक नेताओं को सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, नेताओं को नैतिकता के साथ–साथ लोगों को समझने और सहानुभूति रखने की भी आवश्यकता है। विद्यार्थी जीवन में डी.ई.आई. में अध्ययन करने से स्वाभाविक रूप से ये गुण पैदा होते हैं। शैक्षणिक उत्कृष्टता के अलावा, छात्रों को कृषि प्रथाओं, चिकित्सा शिविरों, डेयरी प्रथाओं, सामुदायिक सेवा आदि के माध्यम से जीवन की बुनियादी बातों से अवगत कराया जाता है। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में निस्वार्थ भाव से काम करने से छात्रों की मानसिकता और दृष्टिकोण में परिवर्तनकारी बदलाव आता है। यह उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हुई कठिनाइयों और संघर्षों के प्रति सहानुभूति और प्रशंसा विकसित करने में मदद करता है। यह मानसिकता उन्हें लाभप्रदता के स्थान पर मूल्यों और नैतिकता को चुनने का साहस देती है। मैं दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट से स्नातक होने का अवसर पाकर बहुत आभारी हूँ, जहां मैंने इन मूल मूल्यों को सीखा

और अपनाया जो मेरे जीवन को आकार देते रहे हैं।

AAFDEI गतिविधियाँ: एक रिपोर्ट

वसंत वुप्पुलुरी, सदस्य, AAFDEI द्वारा संकलित

डी.ई.आई. के पूर्व छात्रों और मित्रों का संघ (AAFDEI) 1986 के आंतरिक राजस्व संहिता के 501 (सी) (3) के तहत 2009 से संयुक्त राज्य अमेरिका में एक पंजीकृत गैर–लाभकारी संगठन के रूप में काम कर रहा है। 2020 में, पूर्व छात्र प्लेसमेंट सहायता सैल (APAC) का गठन AAFDEI के आधार पर एक समर्पित टीम के रूप में किया गया था, जिसे AAFDEI APAC के नाम से जाना जाता है, जिसका मिशन संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में समुदाय के सदस्यों को कैरियर विकास हेतु सहायता प्रदान करना है। AAFDEI & APAC उन उम्मीदवारों को सहायता और सलाह भी प्रदान करता है जो भारत से उत्तरी अमेरिका में स्थानांतरित हो रहे हैं।

AAFDEI के सदस्य विभिन्न प्रकार के उद्योगों और संगठनों में कार्यरत हैं, जो AAFDEI & APAC को प्रासंगिक संगठनों में रेफरल (referral) प्रदान करके और नौकरी प्लेसमेंट में मार्गदर्शन प्रदान करके नौकरी चाहने वालों की सहायता करने के लिए पूरे उत्तरी अमेरिका में सक्षमकर्ताओं का एक मजबूत नेटवर्क बनाने में सक्षम बनाता है। नौकरी चाहने वालों के लिए लक्षित संपत्ति विकसित करने के लिए कार्य योजना प्रगति पर है। इन परिसंपत्तियों में साक्षात्कार प्रश्न बैंक और उद्योग प्रमाणन मार्गदर्शिकाएँ शामिल हैं। AAFDEI & APAC नौकरी चाहने वालों के लिए एक मासिक वर्चुअल ओपन फार्म भी आयोजित करता है। इसके अलावा, त्रैमासिक वेबिनार और कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। 8 अक्टूबर, 2023 को विभिन्न उद्योगों के वक्ताओं के साथ इंटर्नशिप पर एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। रोजगार सहायता गतिविधियों के अलावा, AAFDEI नियमित रूप से पाठ्यक्रम सामग्री की तैयारी और समीक्षा में डी.ई.आई. की सहायता भी करता है। सर्कुलर इकोनॉमी में एक पाठ्यक्रम का विकास हाल ही में संपन्न हुआ। इसके अलावा, AAFDEI वर्तमान में बैचलर ऑफ कॉमर्स पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के विकास और समीक्षा में कार्यरत है।

पूर्व छात्रों की बाइट्स...
दयालबाग़ में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है.......''

DEI का छात्र होना एक महान वरदान है! मैं मूल्य–आधारित शिक्षा प्राप्त करने के लिए आभार महसूस करती हूँ – DEI ने मेरे जीवन के हर पहलू को गहराई से प्रभावित किया है। DEI में शिक्षा का लक्ष्य उत्कृष्टता है और छात्रों को उनकी जड़ों से उखाड़े बिना तकनीकी–उन्मुख समाज के लिए मार्गदर्शन करना है। यह मानवतावाद, ईश्वर की समानता, पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे की भावना को जाग्रत करता है। मुझे ऐसे प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़ने पर गर्व है।

–अंजलि पॉल, बैच बी.कॉम 1994, एम बी एम 1996, पी जी डी टी 2012, डी.ई.आई., मेंटर, एम ओ एम एस पी (2010–2021), एम बी ए (2016–2020), डी.ई.आई नोएडा सूचना केंद्र

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा
संपादक: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर
सदस्यों: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी
सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन, प्रो. वी.बी. गुप्ता
संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा
संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लौलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल
संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय: पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002
पंजीकृत कार्यालय: 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन: दयालबाग़ प्रेस